*मूलस्वर भाषण**

दुव्वुरी सुब्बाराव

ओईसीडी तथा विश्व बैंक के साथ रिज़र्व बैंक की सहभागिता

1. वित्तीय शिक्षा पर आयोजित इस अत्यन्त महत्वपूर्ण सम्मेलन में, रिज़र्व बैंक, दो प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं - ओईसीडी तथा विश्व बैंक - के साथ सहभागिता का यह अवसर पाकर बड़े हर्ष का अनुभव कर रहा है।

2. समूचे विश्व और समस्त भारत से आए सभी डेलीगेट्स का हार्दिक स्वागत!

रिज़र्व बैंक और वित्तीय साक्षरता

3. रिज़र्व बैंक, जो कि एक केंद्रीय बैंक है और जिसका प्रमुख विषय, मूल्य स्थिरता बनाना तथा वृद्धि को प्रोत्साहित करना है - वह वित्तीय साक्षरता जैसे सर्वोत्कृष्ट विकासात्मक मुद्दे पर आगे मोर्चे पर क्यूं डटा है?

- इसके दो कारण हैं
- पहला कारण
- रिज़र्व बैंक के पास केवल एक केंद्रीय बैंक की भूमिका निभाने की बजाय एक व्यापक अधिदेश है
- ऐतिहासिक रूप से रिज़र्व बैंक ने वित्तीय क्षेत्र में एक अत्यंत महत्वपूर्ण विकासात्मक भूमिका निभाई है।
- 1969 में शुरू की गई अग्रणी बैंक योजना, जिसमें देश के हर ज़िले में, एक बैंक को, अग्रणी बैंक नामित किया गया, ताकि वह एक ज़िला क्रेडिट प्लान के समनुरूप जिले के सभी बैंकों से, ऋण के प्रवाह को कोऑर्डिनेट करे।
- प्राथमिकता क्षेत्र ऋण वितरण - जिसके द्वारा बैंकों को अपने कुल ऋण वितरणों का एक न्यूनतम निर्धारित भाग निर्दिष्ट प्राथमिकता क्षेत्रों को वितरित करने के लिए अधिदेशित किया गया है।
- रिज़र्व बैंक ने वित्तीय समावेशन उपायों पर अभिनव नेतृत्व प्रदान किया है।
- रिज़र्व बैंक वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता अभियानों में अग्रणी है क्योंकि हमारा विश्वास है कि एक बैंकिंग विनियामक को, खासकर भारत जैसी विशाल विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए, इन लक्ष्यों को आगे बढ़ाने में न केवल अनन्य लाभ और अवसर हैं बल्कि एक सुनिश्चित बाध्यता भी है
- भारत सरकार तथा रिज़र्व बैंक मिलकर कार्य करते हैं।

वित्तीय साक्षरता और वित्तीय स्थायित्व

- रिज़र्व बैंक आगे की पंक्ति में क्यों है ? (दूसरा कारण)
- न केवल उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) बल्कि उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में भी केंद्रीय बैंक, वित्तीय साक्षरता में भूमिका क्यों निभा रहे हैं, इसका एक अन्य महत्वपूर्ण कारण भी है। यह कारण 2008-09 के वैश्विक वित्तीय संकट के अनुभव से उपजा है।
  - संकट के कई मूल और कई आसन्न कारण थे ।
  - एक मूल कारण था - वित्तीय मामलों की समझ का अभाव जिसने ''सब-प्राइम'' उधारकर्ताओं को टीज़र रेट ऋणों की प्राप्ति की ओर अग्रसर किया।
  - यह तर्क भी दिया जा सकता है कि यदि लोग वित्तीय रूप से अधिक शिक्षित होते तो ''सब-प्राइम'' ऋणों की यह समस्या इतना विकराल रूप धारण न करती।
  - बर्नान्केः परिवारों और समुदायों की बेहतरी और उनमें सुधार के लिए हम जो सर्वोत्तम कार्य कर सकते हैं उनमें यह भी है कि लोगों में इस बात की बेहतर समझ पैदा की जाए कि उधार कैसे लिया जाए, किस समझदारी से बचत की जाए तथा व्यक्तिगत संपदा (वेल्थ) कैसे निर्मित की जाय।
  - समग्र उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में, संकटोत्तर सुधार उपायों में उपभोक्ता सुरक्षा पर बहुत अधिक बल दिया गया है।

* मार्च 2013 को नई दिल्ली में भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर डॉ. दुव्वुरी सुब्बाराव द्वारा दिया गया अभिभाषण

- उपभोक्ताओं की सुरक्षा के लिए अब तक का सर्वोत्तम और सर्वाधिक प्रभावी तरीका यह है कि उन्हें वित्तीय रूप से साक्षर बनाया जाए।
- इस प्रश्न का कि वित्तीय साक्षरता में केंद्रीय बैंक की अधिकारिता क्या है? का उत्तर है -
- केंद्रीय बैंक के अधिदेश का एक भाग, वास्तव में ही एक महत्वपूर्ण भाग है, वित्तीय स्थिरता की सुरक्षा
- वित्तीय स्थिरता की एक अनिवार्य पूर्वापेक्षा है - वित्तीय साक्षरता
- वित्तीय साक्षरता प्रदान करने में केंद्रीय बैंक की एक अनन्य लीवरेज है ।

मैं क्या कहूं ?

4. मैंने काफी सोचा, यह निर्धारित करने में, कि मैं इस उद्घाटन सत्र में ऐसा क्या कहूँ जिससे इस सम्मेलन की वैल्यू बढ़े -उस फ्रंटलाइन अनुभव तथा विषय वस्तु विशेषज्ञता, जिसके साथ कि आप सब लोग यहाँ आए हैं, मेरी ओर से तो यह धृष्टता ही होगी कि मैं आगामी 3 दिनों के लिए विचार विमर्श हेतु कोई कार्य सूची आपके सामने रखूं। इसलिए मैं कुछ कम महत्वाकांक्षी करने का प्रयास करूंगा।

मैं आप के सामने रखूंगा -

i. वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता की चुनौती की एक बड़ी तस्वीर सामान्य रूप से तथा विशेषकर भारत के परिप्रेक्ष्य में

ii. आपको संक्षेप में बताऊँगा, वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता के क्षेत्र में रिज़र्व बैंक द्वारा किए गए कार्य और चुनौतियाँ

iii. कुछ ऐसे आत्मविश्लेषणात्मक और महत्वपूर्ण प्रश्न भी उठाऊँगा जिनके बारे में हम खुद से सवाल करते रहते हैं।

वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता

5. मुझे ज्ञात है कि यह सम्मेलन वित्तीय शिक्षा पर है। इसके बावजूद आपने मुझे वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता दोनों पर एक साथ बोलते देखा होगा। यह कोई भ्रम नहीं है। यह मैं जानबूझकर करता हूँ।

- वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता एक दूसरे से अभिन्न हैं
- ये एक इंटेग्रल कार्यनीति के दो तत्व हैं
- वित्तीय समावेशन पहुंच प्रदान करता है
- वित्तीय साक्षरता जागरूक बनाती है
- वित्तीय सुविधाओं से रहित लोगों को दोनों की जरूरत है - वित्तीय सेवाओं के प्रति जागरूकता और उस तक पहुंच
- वित्तीय समावेशन - आपूर्ति पक्ष
- वित्तीय साक्षरता - मांग पक्ष

बड़ा प्रश्न : वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता आवश्यक क्यों हैं ?

6. वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता आवश्यक क्यों हैं?

वे इसलिए आवश्यक हैं क्योंकि वित्तीय समावेशन साम्यिक वृद्धि बनाए रखने के लिए एक आवश्यक शर्त है। ऐसे उदाहरण विरले ही होंगे कि व्यापक वित्तीय समावेशन के बगैर ही किसी कृषि प्रणाली ने स्वयं को, उद्योगोत्तर आधुनिक समाज में, रूपान्तरित किया हो।

7. वित्तीय सेवाओं तक सुविधाजनक पहुंच रखने वाले हम सब लोगों को अपने व्यक्तिगत अनुभव से ज्ञात ही है कि आर्थिक अवसर, वित्तीय पहुंच से, मज़बूती से सहबद्ध होते हैं।

8. विश्व बैंक - गरीबी पर धावा

- गरीबी पर धावा विषय पर सेमिनल डब्ल्यू डीआर 2000-01

  गरीबी पर धावे के तीन आयाम

  - निर्धनों को अपने जीवन में सुधार लाने के अवसर प्रदान करना
  - निर्धनों को सशक्त बनाना कि वे अधिक जवाबदेह सरकारी और सामाजिक संस्थाओं की मांग कर सकें
  - जोखिमों का मुकाबला करने के लिए गरीबों को सुरक्षा प्रदान करना

- **अवसर सशक्तीकरण तथा सुरक्षा**

  वित्तीय समावेशन इन तीनों आयामों के लिए जरूरी है

- विकास का अनुभव बताता है कि गरीब, खैरात नहीं चाहते। वे हैण्डआउट्स नहीं चाहते। वे अवसर चाहते हैं।
- अवसर प्रदान करने के लिए वित्तीय समावेशन और वित्तीय जागरूकता दोनों की जरूरत है। वे काफी सशक्त तरीके से गरीबों को 'एन्फ्रेन्चाइज़' करते हैं और उन्हें आय संबंधी आघातों से सुरक्षा प्रदान करते हैं।

भारत में वित्तीय समावेशन

9. अब मैं थोड़ा और केंद्रित होना चाहता हूं। भारत का उदाहरण लें : वित्तीय समावेशन सभी जोखिम धारकों के लिए अच्छा है

- गरीबों के लिए अच्छा। उनको अपनी आय बढ़ाने और जीवन स्तर सुधारने के अवसर
- बैंकों के लिए अच्छा, स्थिर कम लागत बचत - एएलएम
- सरकार के लिए अच्छा : गरीबी उन्मूलन का शक्तिशाली साधन, लीकेज को भी कम करता है।
- अर्थव्यवस्था के लिए भी अच्छा : निर्धनों की बचतें औपचारिक वित्तीय क्षेत्र में आएंगी।

10. निर्धनों, बैंकों, सरकार तथा अर्थव्यवस्था - सभी के लिए **जीत ही जीत.** केवल सार्वजनिक भलाई ही नहीं अच्छी गुणवाली भलाई

11. भारत - बृहत् तस्वीर

(i) 600,000 -100,000 बैंक शाखाएं - लगभग केवल 10 प्रतिशत

(ii) केवल 40 प्रतिशत परिवारों के बैंक खाते हैं

(iii) वित्तीय अनावेशन बहुत ज्यादा है

12. रिज़र्व बैंक ने क्या किया है ?

वित्तीय समावेशन

- बैंक जनित दृष्टिकोण
- अविनियमित बैंक शाखाएं खोलना
- 25 प्रतिशत नई शाखाएं ग्रामीण क्षेत्रों में
- बीसी मॉडेल के जरिये वित्तीय समावेशन को और आगे ले जाने के लिए टेक्नोलॉजी का लाभ
- डीलाइसेन्स्ड एटीएम
- बिना किसी न्यूनतम बैलेन्स के बेसिक बैंकिंग खाता खोलने के लिए, के.वाय.सी. मानदण्डों को उदार बनाया गया।

13. वित्तीय साक्षरता

- रिज़र्व बैंक ने वित्तीय शिक्षा पर एक राष्ट्रीय कार्यनीति बनाई जिसका लक्ष्य देश की जनसंख्या के सभी वर्गों का ध्यान रखना था।
- साधारण, व्यापक और समावेशी
- चूंकि चुनौती, विशाल संख्या में वित्तीय रूप से अनावेशित लोगों को साथ जोड़ने की है, अतः, आधार स्तर पर कार्यनीति का फोकस, मूल वित्तीय उत्पादों के प्रति जागरूकता निर्मित करने पर है। इसके लिए साक्षरता प्रयास, प्रमुखतः देश भर में बड़े अभियानों के जरिये, देसी भाषा में वित्तीय विवेक के सादे संदेशों को प्रचारित करने की ओर लक्ष्यित हैं। इसके साथ-साथ बैंकों, बीमा पेंशन निधियों तथा अन्यों द्वारा, जोर-शोर से, वित्तीय समावेशन योजनाएं बनाकर प्रस्तुत करना।
- कार्यनीति समावेशी, सक्रिय है और यह व्यक्तियों वित्तीय क्षेत्र विनियामकों, शिक्षा संस्थाओं, गैर सरकारी संगठनों, वित्तीय क्षेत्र की संस्थाओं, बहुस्तरीय अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं तथा केंद्रीय एवं राज्य सरकारों सभी को शामिल करती है।

14. बैंक तथा वित्तीय साक्षरता

- हमने बैंकों को सूचित किया है कि समूचे देश में सभी जिलों (640+) में कम से कम एक वित्तीय साक्षरता केंद्र' अवश्य होना चाहिए। इन केन्द्रों को माह में कम से कम एक आउटडोर वित्तीय साक्षरता कैम्प अवश्य लगाना है। आज तक बैंक लगभग 650 विसा केंद्र खोल चुके हैं।
- इसके अतिरिक्त प्रत्येक ग्रामीण शाखा (35,000+) को भी माह में कम से कम एक वित्तीय साक्षरता कैम्प लगाना है। इन कैंपों के माध्यम से हम साधारण संदेशों के रूप में वित्तीय साक्षरता प्रदान करने का विचार रखते हैं, कि बैंकों के पास अपनी बचत क्यों रखी जाए, बैंकों से उधार क्यों लिया जाए, जहां तक संभव हो आय

अर्जक गतिविधियों के लिए ही ऋण क्यों लिया जाए, समय पर चुकौती क्यों की जाए, बीमा क्यों करवाया जाए, अपनी सेवा निवृत्ति के लिए बचत क्यों की जाए, आदि।

- अप्रैल 2012 से हम इन साक्षरता कार्यक्रमों के जरिए लगभग दस लाख से अधिक लोगों को शिक्षित करने में समर्थ हुए हैं।

15. वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता पर हमारी कार्यनीति

- बैंक अग्रणी मॉडल
- विनियम की बजाय नैतिक प्रेरणा द्वारा जिसमें बैंकों से कहा जाता है कि वे इस कार्य में अपना प्रबुद्धिक स्वहित देखें।
- हज़ारों पुष्प पल्लवित हों

16. बैंकों द्वारा तैयार की गई और क्रियान्वित की गई एफआईपी। कोई और अधिक प्रिस्क्रिप्टिव मॉडल क्यों नहीं ?

i. अभिनव विचार
ii. उनके कारोबारी मॉडलों के अनुरूप तैयार की गई
iii. योजना (प्लान) का स्वामित्व
iv. भारत एक विविधता से भरा देश है। होने दीजिए हजारों प्रयोग।

17. कई कार्यानुभव

- कुछ संख्याओं में
- कुछ दिल को छूने वाली कहानियां जिनको हमने भारत के एक कोने से दूसरे कोने में सुना
- अब बैंकिंग गांवों तक पहुंच गई है - 200,000-600,000 शाखाओं+बिजनेस कॉरेस्पांडेंट्स के जरिए
- करोड़ों अशिक्षित लोग बैंक लेनदेनों के लिए बायोमीट्रिक पहचान वाले स्मार्ट कार्डों का प्रयोग कर रहे हैं (सेक्रेटरी गिथनर)
- लाखों लोग बैंकिंग के लिए मोबाइल, हाथ में पकड़ी जाने वाली इलैक्ट्रॉनिक डिवाइसों, का प्रयोग कर रहे हैं
- पूरे देश में लगभग एक करोड़ स्वयं सहायता समूह, आय बढ़ानेवाली गतिविधियों के लिए बैंकों के साथ क्रेडिट लिंक किए जा चुके हैं।
- जैसे ग्रामीण लोग स्कूलों और स्वास्थ्य केंद्रों की मांग किया करते हैं वैसे ही अब वे बैंक शाखाओं की भी मांग कर रहे हैं (जालंगा के आस-पास के गांव)
- महिलाएं स्वैच्छिक रूप से स्वयं सहायता ग्रुप बना रही हैं।
- आउट रीच कार्यक्रम - 50 प्रतिशत से अधिक सहभागी महिलाएं।
- ईबीटी - कई राज्यों में
- 50 जिलों में प्रत्यक्ष नकद अंतरण।

18. रिज़र्व बैंक के लिए चुनौती

- बैंक इसे बाध्यता समझते हैं न कि अवसर
- के वाय सी (प्रवासी श्रमिक) तथा यूआईडी - सुरक्षा पर समझौता किए बिना इनका सरलीकरण
- सार्थक वित्तीय समावेशन (टॉयलेट, बैंक खाता)

नए बैंक लाइसेंस

19. नए बैंक लाइसेंस, वित्तीय समावेशन के लिए, कार्यनीति की एक आवश्यक आलोचना (क्रिटीसिज़्म) होगी।

रिज़र्व बैंक के विरुद्ध आलोचनाः रिज़र्व बैंक नवोन्मेष के लिए खुला दिमाग रखता है।

20. आत्मविश्लेषी मगर महत्वपूर्ण प्रश्न :

- वित्तीय समावेशन को गहराई तक ले जाने और वित्तीय साक्षरता को आगे बढ़ाने की राह में क्या हम गरीबों के बारे में पर्याप्त जानकारी रखते हैं?
- क्या हम यह पर्याप्त रूप से समझते हैं कि गरीब लोग ऐसे उत्पाद और सेवाएं डिज़ाइन करने के लिए अपने वित्त का प्रबंधन कैसे करते हैं, जो कि उनकी अपेक्षाओं को पूरा कर सकें?
- क्या हम समस्या के बारे में खुले दिल से सोचते हैं या फिर यह समझने में अपनी पुरानी सोच पर ही टिके हुए हैं कि निर्धन लोग ऐसे अतार्किक दिखने वाले रास्ते को क्यों अपनाते हैं?
- क्या हम अपनी उसी पुरानी सोच पर तो नहीं अड़े जिसमें गरीबों से संबंधित चिंताओं पर ध्यान ही नहीं दिया जाता?

इला भट्ट (सेवा) डब्ल्यूडीआर 2000-01ः हम निर्धन भी हैं और अशिक्षित भी। असाक्षरता मेज़ की दूसरी ओर है।

निर्धनों के पोर्टफोलियोज़

21. इन प्रश्नों को अधिक ठोस फैशन में फ्रेम करें।

i. निर्धनता के लिए विश्व बैंक का मापदंड है, 2 डॉलर प्रति दिन। 2 डालर प्रतिदिन में जीवन यापन करने के संबंध में जो सबसे कम समझी गई समस्या है वह यह है कि आप दो डॉलर प्रति दिन नहीं कमाते । यह एक प्रकार का औसत है। आखिर आप इससे निपटेंगे कैसे?

ii. निर्धनों की न केवल आय कम होती है बल्कि अनियमित भी होती है और यह आय हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती। उनकी बचतें नाममात्र की होती हैं और फिर उन्हें नौकरी चले जाने, बीमारी और परिवार में मौत का सामना भी करना पड़ता है? शिक्षा, विवाह और त्यौहारों पर मोटा खर्चा करना पड़ता है?

iii. एक परंपरागत दृष्टिकोण है 'गरीब बचत करेगा कैसे, उसके पास तो पैसा ही नहीं है', पर यह सिर्फ ऊपरी समझदारी है। गरीब को भी प्रत्येक की तरह बचत तो करनी ही पड़ेगी क्योंकि उसका भी वर्तमान और भविष्य है। आज उनके पास पैसा कम हो सकता है परंतु यदि वे सारा खर्च कर देंगे तो कल के लिए उनके पास बहुत कम बचा रहेगा।

iv. एक ओर रूढ़िवादी दृष्टिकोण है : गरीबों की बचत बहुत कम होती है इसलिए उन्हें अधिक वित्तीय प्रबंधन तकनीकों की कोई जरूरत नहीं, जबकि असल में चूंकि गरीबों की आय कम अनियमित, अन-अनुमानित होती है इसलिए उन्हें तो और अधिक वैशिष्ट्यपूर्ण वित्तीय प्रबंधन की आवश्यकता है। 20 डॉलर प्रतिदिन बनाम दो डॉलर प्रतिदिन।

(v) डेरिल कॉलिन्स, स्टूअर्ट रदरफोर्ड द्वारा आकलित गरीबों के पोर्टफोलियोज़

- भारत, बांगला देश और दक्षिण अफ्रीका
- वैशिष्ट्यपूर्ण वित्तीय प्रबंधन की जरूरत
- डायरियां - रोज़मर्रा के वित्त का प्रबंधन कैसे करते हैं
- सच्चाई यह है कि धन का प्रबंधन गरीबों के लिए दैनिक जीवन का एक मूलभूत और अच्छी तरह समझा हुआ हिस्सा है
- रूढ़िवादी दृष्टिकोण यह है कि गरीब लोग लापरवाह और अक्षम होते हैं, भूल जाइए इसे। वे ऐसे नहीं होते।

(vi) कमजोर अर्थशास्त्र - अभिजित बैनर्जी और एस्थर डुफलो

i. गरीब लोग एक साथ ही बचत भी करते हैं और उधार भी लेते हैं - ऐसा क्यों?

ii. कुछ देशों में गरीब लोग वास्तव में धन बचाने के लिए धन चुकाते हैं - अर्थात् वे वास्तव में ऋणात्मक ब्याज दर स्वीकार करते हैं।

iii. अर्ना कुलम - सर्वेक्षण-सूदखोरों पर निर्भरता

iv. प्रतीत होता अतार्किक व्यवहार हमें बताता है कि वित्तीय समावेशन का अनुसरण कैसे करना चाहिए।

22. पिरामिड के तल में सौभाग्य - दकियानूसी विश्वास या घिसा पिटा पद

- पिरामिड के तल में सौभाग्य वास्तव में है।
- समूचे देश में लाखों स्वयं सहायता समूहों की अद्भुत सफलता - दिल छू लेने वाली सफलता की कहानी।
- हर निर्धन पुरुष और महिला के अंतर्मन में एक नवजात पूंजीवादी है। बिना पूंजी का पूंजीवादी, जैसा कि बैनर्जी और डुफलो ने उन्हें कहा।
- निर्धनों में जो प्रचुर उद्यमशीलता है, हमारी समझ का, वह सबसे कम मान्यताप्राप्त हिस्सा है1
- विशुद्धतः, वर्णित व्यवसायों के संदर्भ में निर्धन देशों के अधिकांश आय समूह विकसित विश्व के अपने प्रतिरूपों के मुकाबले में अधिक उद्यमशील हैं, अर्थात् निर्धन लोग अन्य की तुलना में कम नहीं है। एक ऐसी टिप्पणी जिसने हॉर्वर्ड बिजनेस स्कूल के प्रोफेसर तरूण खन्ना को ''बिलियन्स ऑफ एन्टरप्रेन्योर्ज्र'' लिखने के लिए प्रेरित किया।

वित्तीय साक्षरता तथा समावेशन - विकासशील देशों के लिए चुनौती अनोखी नहीं है

23. कुछ सप्ताह पहले की पत्रिका ''दी इकोनोमिस्ट लाइफ ऑन दा एज़िज़ ऑफ अमेरिकाज़ फाइनेंशियल मेनस्ट्रीम'' नामक लेख

- दिसम्बर 2012 में फेड्रल डिपॉजिट इन्श्यूरेंस कार्पोरेशन (एफडीआईसी) ने एक सर्वेक्षण जारी किया जिसमें पाया गया कि अन्दाजन 12 अमरीकी परिवारों में से एक अर्थात लगभग 17 मिलियन वयस्क, बैंक सुविधा रहित हैं, अर्थात् न उनका चालू खाता, है न उनका बचत खाता है।
- सर्वेक्षण से यह भी पता लगा कि हर जांच में से एक अमरीकी परिवार, अल्प बैंक सुविधा वाला है अर्थात् उसका बैंक खाता तो है मगर वह वैकल्पिक सेवाओं पर भी भरोसा करता है, जैसे-उच्च लागत वाले उत्पाद जैसे - पे डे ऋण, चैक नकदीकरण सेवाएं, गैर बैंक मनिऑर्डर अथवा पॉन शॉप्स।
- न तो सभी 'बैंक-सुविधा-रहित-लोग' निर्धन हैं और न ही सभी निर्धन लोग बैंक खातारहित हैं मगर कम आय वर्ग वाले परिवारों (एफडीआईसी सर्वेक्षण में दी गई परिभाषा के अनुसार वे लोग जिनकी वार्षिक आय 15,000 डॉलर से कम है) में बैंक सुविधारहित परिवारों की दर समग्र दर से तीन गुना है।

वित्तीय साक्षरता के बारे में विचलित करने वाले प्रश्न

24. (इकोनोमिस्ट)- वित्तीय साक्षरता

- एक परीक्षाः मान लीजिए आपके पास एक बचत खाते में 100 डॉलर हैं जिस पर प्रति वर्ष 2 प्रतिशत की दर से ब्याज मिलता है। अगर आपके खाते में यह रकम रहती है तो पांच साल के बाद आपके पास कितना इकट्ठा होगा? 102 डॉलर से ज्यादा, एकदम 102 डॉलर या 102 डॉलर से कम।
- यह परीक्षा इतनी आसान है कि आपको लगता है कि इसमें कुछ छल है। इसमें कोई छल नहीं है। लेकिन सर्वेक्षण में पाया गया कि पचास वर्ष से ऊपर के अमरीकनों में से केवल आधों ने ही सही उत्तर दिया। अगर इतने सारे लोगों को वित्त की इतनी कम समझ है तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वे वित्तीय निर्णय लेने में अवश्य ही मुश्किलों का सामना करते होंगे।

समाधान स्पष्ट है, और अधिक वित्तीय शिक्षा प्रदान की जाए।

लेकिन क्या लोगों को वित्तीय विद्वान होना सिखाया जा सकता है? फेड्रल रिजर्व बैंक ऑफ क्लीवलैंड के एक सर्वेक्षण में बताया गया है कि दुर्भाग्यवश, हमारे पास इस बात के निष्कर्षस्वरूप साक्ष्य नहीं हैं कि सामान्यतः वित्तीय शिक्षा कार्यक्रमों से अधिक वित्तीय ज्ञान प्राप्त होता हो और अन्ततः बेहतर वित्तीय व्यवहार प्रदर्शित होता हो।

तो क्या वित्तीय शिक्षा कार्यक्रम असफल है - बिल्कुल नहीं। इस शिक्षा का प्रयोजन है लोगों को वित्तीय निर्णय, और अधिक समझदारी से, तथा और अधिक आत्मविश्वास से लेने के लिए शिक्षित करना

- इसे दिलचस्प बनाइए
- इसे शिक्षाप्रद बनाइए
- इसे आयु और आय-वर्ग से जोडिए

सारांश तथा निष्कर्ष

25. अभी तक जो मैंने कहा है, अब मैं इसका सारांश प्रस्तुत करूंगा

i. वित्तीय समावेशन को और गहरा बनाने तथा वित्तीय साक्षरता का प्रसार करने में पहुंच और जागरूकता संबंधी समस्याएं।

ii. गरीब देशों में समस्या, अमीर देशों में समस्या

iii. पुरातनपंथी दृष्टिकोणों को समाप्त करो

iv. इन समस्याओं की जड़ सामाजिक और जनसांख्यिकीय तत्वों को बताना बहुत आसान है परंतु इस बात के साक्ष्य हैं कि इन्हीं सामाजिक और जनसांख्यिकीय तत्वों में होते हुए भी कुछ देशों ने, अन्य देशों से बेहतर कार्य करके दिखाया है। अतः कार्यनीतियों, नीतियों और प्रतिबद्धता का भी महत्व है

v. इससे भी अधिक, कल्पना और अभिनवता भी चाहिए।

vi. कोई एक आकार सभी पर फिट नहीं होता। इसकी बजाय हमें हजारों पुष्पों को पल्लवित होने देना है; हजारों असली जीवन प्रयोगों को होने देना है, सामूहिक अनुभव से सीखो और तय करो कि क्या हो सकता है, क्या नहीं, और क्यों?

26. सम्मेलन के अंत तक इसमें वित्तीय समावेशन और वित्तीय शिक्षा से संबंधित चुनौती और शिक्षा के बारे में और अधिक समझ विकसित हुई है जिसे हमने आपस में भी बांटा है।

27. सम्मेलन की सफलता के लिए मेरी ओर से शुभकामनाएं।

*स्वागत भाषण**

के.सी.चक्रवर्ती

भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर डॉ.डी.सुब्बाराव, विश्व बैंक के कंट्री डायरेक्टर श्री ओनो रुल, एम्बेसेडर रिचर्ड बाउचर, ओईसीडी के डिप्टी सेक्रेट्री जनरल, ओईसीडी विश्व बैंक तथा समूचे विश्व के देशों से पधारे डेलीगेट्स; भारतीय रिज़र्व बैंक तथा भारत में वित्तीय शिक्षा के प्रचार-प्रसार में लगी विनियामक संस्थाओं और एजेंसियों के साथीगण; देवियो और सज्जनो! रिज़र्व बैंक ओईसीडी तथा विश्व बैंक द्वारा संयुक्त रूप से वित्तीय शिक्षा पर आयोजित इस क्षेत्रीय सम्मेलन के अवसर पर भारत की राजधानी नई दिल्ली, जो कि एक समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परंपराओं का नगर है, में आपका स्वागत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। जैसा कि आपको ज्ञात ही है कि यह सम्मेलन वित्तीय साक्षरता और शिक्षा पर बनाए गए रूस/ओईसीडी/विश्व बैंक ट्रस्ट निधि की गतिविधियों के बारे में सूचनाओं का प्रसार करने के लिए आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला के एक अंश के रूप में आयोजित किया गया है। इसी श्रृंखला में, हाल ही में, दो अन्य सम्मेलन कार्टाजेना तथा नैरोबी में आयोजित किए गए थे। भारतीय रिज़र्व बैंक में हम इस महत्वपूर्ण सम्मेलन को सह आयोजित करके गर्व का अनुभव कर रहे हैं क्योंकि यह सम्मेलन, उन सभी जोखिमधारियों को एक साथ मंच पर लाया है जो कि सार्वभौमिक वित्तीय साक्षरता प्राप्त करने के भारत के अभियान में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। हमारा यकीन है कि यह सम्मेलन न केवल हमें, बल्कि अन्य देशों, विशेषकर एशिया प्रशांत क्षेत्र से आए डेलिगेट्स को भी एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान कर रहा है ताकि हम विचारों का आदान-प्रदान कर सकें और एक दूसरे के अनुभव से सीख सकें। इस सम्मेलन के सहभागी के रूप में हम विश्व बैंक और ओईसीडी को पाकर बहुत प्रसन्न हैं और उनका आभार व्यक्त करते हैं। ये दो ऐसी संस्थाएं हैं जिन्होंने समूचे विश्व में अभावग्रस्त लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए वित्तीय साक्षरता के प्रसार तथा वित्तीय प्रणालियों की लिवरेजिंग में अपार योगदान दिया है।

2. आगामी तीन दिनों में सहभागियों को विश्व के बड़े-बड़े विशेषज्ञों सहित देश विदेश के विद्वानों की प्रेरणादायी और ज्ञानवर्धक परिचर्चा सुनने को मिलेगी जिन्हें विभिन्न प्रकार का व्यावहारिक अनुभव है और विश्व के विभिन्न भागों में वित्तीय साक्षरता के कार्यान्वयन में उनके अनुभवों से बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। सम्मेलन के सत्रों को वित्तीय शिक्षा के सभी महत्वपूर्ण पक्षों पर केंद्रित किया गया है। उदाहरणतः, वित्तीय शिक्षा हेतु एक सुआयोजित राष्ट्रीय स्तर के फ्रेमवर्क की महत्ता को देखते हुए वित्तीय शिक्षा के लिए राष्ट्रीय कार्यनीति विकसित करने के अनुभवों पर एक इंटर एक्टिव पैनल डिस्कशन रखी गई है। राष्ट्रीय स्तर की कार्यनीति बनाते समय प्राथमिकता क्षेत्रों की पहचान के लिए विद्यमान वित्तीय साक्षरता स्तरों के आकलन की जरूरत को देखते हुए सम्मेलन में एक ऐसा सत्र शामिल किया गया है जो ऐसे मापन अभ्यासों से जमीनी स्तर के फीडबैक तथा वित्तीय साक्षरता स्तरों के मूल्यांकन हेतु सर्वेक्षणों के प्रयोग को समर्पित है। सम्मेलन में युवाओं तथा महिलाओं जैसे कुछ फोकस समूहों पर भी बल दिया गया है और इन समूहों के लिए अलग चर्चा सत्र रखा गया है। सभी सत्र इस तरह बनाए गए हैं जिससे समूचे अधिकार क्षेत्रों से आए कार्यान्वयन विशेषज्ञों के अनुभवों को बांटा जा सके तथा सीखने के अनुभव को इष्टतम बनाने के लिए सभी डेलिगेट्स में मुक्त सहभागिता को प्रोत्साहित किया जा सके।

* 4 मार्च 2013 को नई दिल्ली में भारतीय रिज़र्व बैंक के उप गवर्नर डॉ के.सी.चक्रवर्ती द्वारा दिया गया अभिभाषण

वित्तीय शिक्षा/साक्षरता की आवश्यकता

3. संक्षेप में सम्मेलन की रूपरेखा प्रस्तुत करने के बाद अब मैं सम्मेलन के थीम को संक्षेप में बताऊंगा। गत कुछ वर्षों में खासकर वैश्विक वित्तीय संकट के उपरान्त, वित्तीय शिक्षा और वित्तीय साक्षरता का महत्व अब काफी हद तक स्वीकार किया जाने लगा है। इसी मान्यता से प्रेरित होकर अब बहुत से देशों ने अपने नागरिकों में वित्तीय साक्षरता प्रचारित-प्रसारित करने के लिए कई कार्यक्रम शुरू किये हैं। जैसा कि ओईसीडी की वित्तीय साक्षरता की परिभाषा इंगित करती है कि, यह वित्तीय जागरूकता, ज्ञान, कौशल, अभिरुचि तथा व्यवहार का एक मिश्रण है, जो मजबूत वित्तीय निर्णय लेने के लिए आवश्यक है और अंततः जिससे व्यक्तिगत वित्तीय भलाई प्राप्त की जा सकती है परंतु इस संबंध में मेरा मानना है कि वित्तीय साक्षरता न केवल लोगों की वित्तीय भलाई के लिए ही आवश्यक है बल्कि यह समूचे राष्ट्र की आर्थिक सलामती के लिए भी एक अनिवार्य शर्त है।

4. वित्तीय निरक्षरता केवल निर्धनों अथवा कम विकसित अर्थव्यवस्थाओं तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह सभी सामाजिक और आर्थिक स्तरों पर विद्यमान है। केवल अर्थव्यवस्था के विकास के चरण और एक ही देश में व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति के आधार पर ही, वित्तीय निरक्षरता में भिन्नता होती है। मुझे इसमें पक्का यकीन है कि वित्तीय प्रणाली से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को वित्तीय रूप से साक्षर होना चाहिए। इनमें न केवल वित्तीय सेवाओं के उपयोगकर्ता ही शामिल हैं बल्कि सेवाओं के प्रदाता तथा यहां तक कि नीति निर्माता और विनियामक भी शामिल हैं। जिन देशों ने वित्तीय शिक्षा कार्यक्रम सफलतापूर्वक चलाए हैं उन्होंने इसके काफी लाभ भी पाए हैं।

व्यक्ति के लिए लाभ

5. व्यक्ति स्तर पर वित्तीय साक्षरता/शिक्षा आवश्यक है क्योंकि यह वित्तीय क्षमता निर्मित करने में सहायक है। यह लोगों को अधिक जानकार, शिक्षित तथा अधिक आत्मविश्वास भरा बनाती है। उनके वित्तीय मामलों पर और अधिक कन्ट्रोल बनाती है तथा औपचारिक वित्तीय प्रणाली तक पहुंच बनाने के लाभों का पूर्ण उपयोग दिलवाती है। जो लोग अपनी वित्तीय परिस्थितियों को भलीभांति समझते हैं वे ही लोग समझदारी के फैसले कर पाते हैं और अपने भविष्य के लिए समुचित प्रावधान कर पाते हैं। वे ही लोग बीमे का उपयुक्त स्तर रखते हैं और बेहतर पेन्शन योजनाओं के साथ अपनी सेवानिवृत्ति आयु तक पहुंचते हैं। उधार लेते समय वे जरूरत से ज्यादा ब्याज नहीं देते और बचत करते समय कम ब्याज पर समझौता नहीं करते। मूलभूत वित्तीय जागरूकता रखनेवाले लोग जोखिम प्रतिफल समझौताकारी समन्वय को ज्यादा बेहतर तरीके से समझते हैं और अच्छे निवेश निर्णय लेते हैं जिससे कि वे धोखाधड़ी तथा सन्देहास्पद योजनाओं के कम शिकार होते हैं। वित्तीय शिक्षा, कर्ज़, गरीबी, रीपज़ेशन्ज, तनाव, बीमारी तथा यहां तक कि अपराध के स्तरों में भी कमी लाती है। संक्षेप में वित्तीय शिक्षा लोगों के जीवन तथा वित्तीय मामलों की गुणवत्ता को बढ़ाती है और धन संबंधी मामलों में उनमें सुरक्षा और आत्मविश्वास की भावना भरकर उनके मन में शांति लाती है।

वृहत् अर्थव्यवस्था के लिए लाभ

6. वृहत् दृष्टिकोण से भी, वित्तीय साक्षरता/शिक्षा के कई सकारात्मक प्रभाव है। वित्तीय साक्षरता, वित्तीय समावेशन तथा उपभोक्ता संरक्षण एक ऐसा त्रिकोण बनाते हैं जिसका सामूहिक रूप से वित्तीय स्थायित्व पर गहरा असर होता है। इस त्रयी की तीन

टांगें एक दूसरे के साथ मजबूती से जुड़ी होती हैं और प्रत्येक तत्व, दूसरे पर गहरा प्रभाव डालता है। इनमें से एक की भी अनुपस्थिति शेष लक्ष्यों को प्राप्त करना कठिन बना देती है। वित्तीय साक्षरता, वित्तीय समावेशन प्रयासों की मदद करती है क्योंकि यह औपचारिक वित्तीय प्रणाली के साथ जुड़ने के लाभों के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करती है जिनसे वित्तीय उत्पादों की मांग पैदा होती है। वित्तीय साक्षरता, उपभोक्ता सुरक्षा में मदद करती है क्योंकि यह उपभोक्ताओं को, वित्तीय उत्पादों में निहित जोखिमों और उत्पादों के फीचर्ज़ के बारे में जागरूक बनाने में बेहतर समझ देती है जिससे दुर्विक्री का जोखिम कम हो जाता है। विवाद के मामलों में यह उपभोक्ता को उपलब्ध शिकायत निवारण प्रणाली के पास जाने की जागरूकता और इच्छा प्रदान करती है।

7. वृहत् आर्थिक स्तर पर वित्तीय निरक्षरता की कीमत काफी बड़ी चुकानी पड़ती है जैसे बेरोजगारी, गरीबी, ऊंची व्यक्तिगत कर्ज़दारी तथा दुर्विक्री के कारण वित्तीय शोषण। इसके परिणामस्वरूप, परिहार्य लीकेज तथा वेस्टेज होती है जिन्हें कोई भी संसाधन से अभावग्रस्त देश नहीं चाहेगा। बचत की आदत वित्तीय शिक्षा के जरिए ही डाली जा सकती है जिससे घरेलू बचतों को उत्पादक कार्यों में लगाने में मदद मिलती है जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक वृद्धि को मदद मिलती है। वित्तीय शिक्षा के प्रयासों से निर्मित वित्तीय सेवाओं की बढ़ी हुई मांग वित्तीय बाजारों में और अधिक गहराई तथा विविधीकरण ला सकती है।

भारत में क्या स्थिति है

8. भारत में वित्तीय शिक्षा एक नीतिगत प्राथमिकता मानी गई है और सरकार, वित्तीय क्षेत्र के विभिन्न विनियामक, वित्तीय संस्थाएं तथा सिविल सोसायटी, इस संबंध में बहुत से प्रयास कर रहे हैं। केंद्रीय वित्त मंत्री की अध्यक्षता में गठित वित्तीय स्थायित्व और विकास परिषद् (एफएसडीसी) को अन्य बातों के साथ-साथ इसका भी अधिदेश प्राप्त है कि वह वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता के प्रचार-प्रसार पर ध्यान केंद्रित करे। एफएसडीसी के तत्वावधान में वित्तीय शिक्षा हेतु ड्राफ्ट राष्ट्रीय कार्यनीति, भारत के लिए तैयार की गई है। इसके अतिरिक्त हम स्कूली बच्चों के लिए वित्तीय शिक्षा पर भी स्वयं को केंद्रित कर रहे हैं और बच्चों पर कोई बोझ डाले बगैर, वर्तमान पाठ्यक्रम में ही वित्तीय साक्षरता की सामग्री को एकत्रित करने के लिए कई राष्ट्रीय पाठ्यक्रम बनानेवाली संस्थाओं को भी हमारे इस अभियान में शामिल कर रहे हैं। इस सम्मेलन के दौरान, रिज़र्व बैंक तथा अन्य एजेंसियों से जुड़े मेरे साथी, सार्वभौमिक वित्तीय साक्षरता के प्रति भारत के जोर के बारे में अपने-अपने गहन विचार प्रस्तुत करेंगे। हम आपके सुझावों और दृष्टिकोणों की प्रतीक्षा करेंगे कि हम इसे और बेहतर और भिन्न तरीके से कैसे कर सकते हैं।

निष्कर्ष

9. जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है वित्तीय साक्षरता एक वैश्विक समस्या है और हमारे सामने चुनौती बहुत बड़ी है। इसका सामना करने के लिए हमें सभी जोखिम धारकों और सभी देशों के साथ तालमेल बैठाने की जरूरत है। हालांकि हर देश के अनुभव अलग-अलग हो सकते हैं, मगर ऐसे शिक्षण बिंदु भी हो सकते हैं जिन्हें हम हर देश से सीख सकते है। मुझे आशा है कि संसार भर से यहां आए विद्वानों के ज्ञान और अनुभवों का लाभ सभी को मिलेगा और यही इस सम्मेलन की सफलता का सबूत होगा। मुझे पूरा यकीन है कि सार्वभौमिक वित्तीय शिक्षा के लिए किए जा रहे इन सामूहिक प्रयासों से व्यक्ति और संस्थाएं, समझदारी भरे वित्तीय फैसले लेने में समर्थ हो सकेंगे और इसके

परिणामस्वरूप, वैश्विक वित्तीय बाजार में काफी स्थिरता आएगी और ऐसे संकटों का असर इस पर कम होगा जैसा कि आज हम भुगत रहे हैं। किसी भी समाज में वित्तीय क्षमता निर्मित करने का यही अंतिम उद्देश्य होता है।

मैं इस सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं और उम्मीद करता हूं कि आनेवाले सत्रों में काफी गंभीर और सार्थक चर्चा इस मुद्दे पर होगी। मैं पुनः आप सबका स्वागत करता हूं और नई दिल्ली में आपके सुखी प्रवास की कामना करता हूं। धन्यवाद !